9 भारत में पर्यावरण संरक्षण
(Environment Conservation in India)

भूमिका *(Introduction)*

भारत में पर्यावरण की सुरक्षा एवं संतुलन के लिये सदियों से प्रयास किये जा रहे हैं। भारत के लोगों का आदिकाल से ही जीव-जंतुओं एवं वनस्पतियों से गहरा संबंध रहा है। यहाँ लोग आज भी जीव-जंतुओं एवं वनस्पतियों को धर्म से जोड़कर उनकी पूजा एवं संरक्षण करते हैं। पृथ्वी पर जीवन का आधार ही पर्यावरण है। प्राकृतिक आपदाओं की त्रासदी को मनुष्य हमेशा से ही देखता आया है और अब वह कृत्रिम कारकों के द्वारा पर्यावरण को प्रभावित होते हुए देख रहा है। सदियों से ही बुद्धिजीवियों ने पर्यावरण एवं मानव जीवन को एक-दूसरे का पूरक बताया है और इस संबंध को मज़बूत बनाए रखने एवं पर्यावरण को स्वस्थ बनाए रखने की बात कही है। भारत के अनेक बुद्धिजीवियों ने विश्व स्तर पर पर्यावरण को संरक्षित करने के लिये एकजुट होने की बात कही जिसमें महात्मा गांधी का नाम प्रमुख है। गांधीजी पर्यावरण के महत्त्व एवं लोगों में पर्यावरण संरक्षण को लेकर जागरूकता बढ़ाने के लिये अभियान चलाते रहे। उनके सिद्धांतों को आधार बनाकर कई लोगों ने विभिन्न क्षेत्रों में पर्यावरण संरक्षण के लिये प्रयास किये। 20वीं शताब्दी में विकास के क्रम में अंधाधुंध तरीके से विश्व के विकसित एवं विकासशील देशों में औद्योगीकरण हुआ जिसमें प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन किया गया। इससे पर्यावरणीय प्रदूषण की दर में वृद्धि हुई और जिसका प्रभाव 1952 में लंदन में धुंध (The Great Smog of London) के रूप में दिखाई दिया। इसके बाद विश्व के अनेक देशों ने पर्यावरण प्रदूषण को लेकर चिंता व्यक्त की और एक साथ मिलकर पर्यावरण संरक्षण के लिये कार्य किये जाने की आवश्यकता पर बल दिया। इसी के तहत 1972 से ही विश्व के विभिन्न देशों में पर्यावरण सम्मेलन आयोजित किये गए जिनके अंतर्गत पर्यावरण की समस्याओं पर अनेक चर्चाएँ हुईं और समस्याओं से निपटने के लिये अनेक संस्थाएँ बनाईं गईं। पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से 1972 का वर्ष भारत के लिये भी अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। 1972 में भारत में कई कानून बनाए गए जिसमें वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से अत्यधिक महत्त्व रखता है। आज ग्लोबल वार्मिंग, सुनामी, वर्षा की कमी, शुद्ध जल की कमी आदि समस्याओं ने संपूर्ण जीव जगत को प्रभावित किया है। विश्व एवं स्थानीय स्तर पर कुछ लोगों ने पर्यावरण के संरक्षण के लिये अत्यधिक प्रयास किये जिसमें कुछ प्रमुख व्यक्ति इस प्रकार हैं-

महात्मा गांधी *(Mahatma Gandhi)*

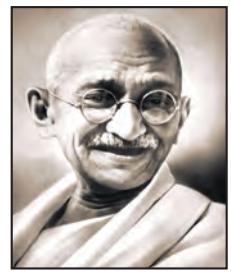

महात्मा गांधी के जीवन एवं दर्शन ने भारत के पर्यावरण संबंधी आंदोलनों को दिशा दी व सकारात्मक रूप से प्रभावित किया। गांधीजी के पर्यावरणीय मूल्यों से ही प्रेरित होकर चंडी प्रसाद भट्ट एवं सुंदरलाल बहुगुणा (चिपको आंदोलन), बाबा आमटे एवं मेधा पाटकर (नर्मदा बचाओ आंदोलन) जैसे प्रकृति संरक्षकों ने आंदोलन चलाए। कई बड़े गैर सरकारी समूहों ने भी सामाजिक एवं पर्यावरणीय सरोकारों से जुड़े कार्यक्रम चलाए। जैसे- 'सुलभ इंटरनेशनल' गांधीजी की प्रेरणा से सफाई कर्मियों विशेषकर हाथ से मैला ढोने वालों (Manual Scavengers) के जीवन स्तर को ऊँचा उठाने के लिये, शिक्षा एवं पर्यावरणीय जागरूकता के लिये कार्य करती है।

गांधीजी ने विभिन्न देशों के औद्योगिक विकास एवं आधुनिक औद्योगिक समाजों द्वारा पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभावों एवं प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन को देखते हुए अपनी चिंता व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि "प्रकृति हमारी ज़रूरतों को पूरा कर सकती है किंतु हमारे लालच को नहीं।" गांधीजी ने हमेशा ही पर्यावरण एवं मानव के संबंधों को परस्पर पूरक माना और पृथ्वी पर जीवन को बचाए रखने एवं भावी पीढ़ी को एक स्वस्थ वातावरण प्रदान करने के लिये पर्यावरण एवं मानव के संबंध को बेहतर बनाए जाने की बात कही। गांधीजी ने पर्यावरण के महत्त्व को समझाते हुए मितव्ययिता एवं साधारण जीवन जीने पर ज़ोर दिया। उनका कहना था कि खुशियाँ एक-दूसरे के साथ सौहार्द्रपूर्ण रहते हुए प्रकृति के साथ आती हैं। यह पृथ्वी एवं पर्यावरण हमारी आने वाली पीढ़ी का हम पर उधार है अत: हमें इसकी रक्षा करनी चाहिये।

इंदिरा गांधी *(Indira Gandhi)*

भारत की पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी का नाम भारत में पर्यावरण के क्षेत्र में वैधानिक रूप से जंतुओं एवं पर्यावरण संरक्षण को सुनिश्चित करने में अग्रणी है। इन्होंने 1972 में वन्यजीव संरक्षण अधिनियम पारित कराकर वन्यजीवों के संरक्षण तथा पर्यावरण संरक्षण को कानूनी अधिकार बनाया। इंदिरा गांधी के कार्यकाल में ही संरक्षित क्षेत्रों की संख्या 65 से बढ़कर 298 हो गई। वह भारतीय वन्यजीव बोर्ड की चेयरपर्सन भी रहीं।

1982 में समुदाय नेतृत्व (Community Leadership) करने के लिये रेमन मैग्सेसे (Raman Magsaysay) पुरस्कार दिया गया। इन्हें भारत सरकार द्वारा 2005 में पद्मभूषण पुरस्कार तथा 2013 में गांधी शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। आज इन्हें मातहत सामाजिक पारिस्थितिकी (Subaltern Social Ecology) पर कार्य करने के लिये जाना जाता है और आधुनिक भारत का प्रथम पर्यावरण विद्वान माना जाता है।

बाबा आमटे *(Baba Amte)*

मुरलीधर देवीदास आमटे (26 दिसंबर, 1914 – 9 फरवरी, 2008) बाबा आमटे के नाम से विख्यात हैं। बाबा आमटे भारत के प्रमुख समाजसेवी एवं पर्यावरण संरक्षण कार्यकर्ता थे। इन पर गांधीजी के विचारों का अत्यधिक प्रभाव था। इन्होंने समाज के परित्यक्त लोगों और कुष्ठ रोगियों के लिये अनेक आश्रमों एवं समुदायों की स्थापना की। इनमें चंद्रपुर, महाराष्ट्र स्थित आनंदवन का प्रमुख स्थान है। ये पर्यावरण संरक्षण के लिये जीवनभर संघर्षरत रहे और अपना पूरा जीवन वन्यजीव संरक्षण तथा नर्मदा बचाओ आंदोलन को समर्पित कर दिया। इन्हें 1971 में पद्मश्री, 1985 में रेमन मैग्सेसे पुरस्कार, 1983 में डेमियन डट्टन (Damien-Dutton) पुरस्कार (कुष्ठ रोग के क्षेत्र में कार्य करने के लिये), 1986 में पद्म विभूषण, एवं 1999 में गांधी शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इसके अलावा विश्व की अनेक संस्थाओं एवं राष्ट्रों द्वारा इन्हें इनके कार्यों के लिये पुरस्कार एवं सम्मान दिया गया।

सुंदरलाल बहुगुणा *(Sunderlal Bahuguna)*

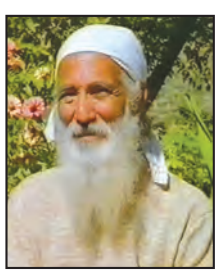

सुंदरलाल बहुगुणा एक गांधीवादी पर्यावरणविद् हैं। इन्होंने महात्मा गांधी के अहिंसा एवं सत्याग्रह के सिद्धांतों को अपनाकर शांतिपूर्ण तरीके से चिपको आंदोलन का नेतृत्व किया और इसे सफल बनाया। चिपको आंदोलन का मूल विचार इनकी पत्नी विमला बहुगुणा का था परंतु इसे लक्ष्य तक पहुँचाने के लिये इसका नेतृत्व इन्होंने किया। ये हिमालय क्षेत्र में वनों के संरक्षण के लिये संघर्ष करते रहे और यह प्रयास तब सफल हुआ जब इंदिरा गांधी ने इनके आग्रह पर हिमालय क्षेत्र के कुछ वन क्षेत्रों को संरक्षण प्रदान करने के लिये कानून पारित करवाया।

1980 से 2004 के बीच ये टिहरी बांध के निर्माण के विरोध में आंदोलन चलाते रहे। इन्होंने टिहरी बांध के कारण पड़ने वाले प्रभावों के संदर्भ में लोगों को जागरूक किया। ये सामाजिक रूप से भी बहुत सक्रिय रहे। ये महिलाओं एवं गरीबों को उनके अधिकार दिलाने के लिये प्रयासरत रहे तथा दलितों को मंदिर में प्रवेश दिलाने के लिये भी आंदोलन चलाया। चिपको आंदोलन के कारण आज विश्वभर में ये **'वृक्षमित्र'** के नाम से प्रसिद्ध हैं। इनके पर्यावरण एवं सामाजिक क्षेत्रों में किये गए कार्यों से प्रभावित होकर विश्व भर की कई संस्थाओं ने इन्हें पुरस्कृत किया। भारत सरकार ने इन्हें 1981 में पद्मश्री एवं 2009 में पद्म विभूषण से अलंकृत किया।

सुनीता नारायण *(Sunita Narain)*

सुनीता नारायण भारत की प्रसिद्ध पर्यावरणविद् हैं। सुनीता नारायण का जन्म 1961 में हुआ। 1982 से सुनीता नारायण भारत में स्थित-विज्ञान एवं पर्यावरण केंद्र से जुड़ी रही हैं। वर्तमान में ये विज्ञान एवं पर्यावरण केंद्र (CSE) की महानिदेशक के रूप में कार्य कर रही हैं। ये पर्यावरण संचार समाज (Society for Environment Communication) की निदेशक भी हैं। साथ ही ये पर्यावरण पर केंद्रित पाक्षिक पत्रिका 'डाउन टू अर्थ' (Down to Earth) की संपादक भी हैं।

सुनीता नारायण पर्यावरणविद् होने के साथ-साथ लेखिका भी हैं। पर्यावरण और राजनीतिक कार्यकर्ता सुनीता नारायण समाज के हरित विकास (Green Development) की समर्थक हैं। इनका मानना है कि वातावरण में फैलती अशुद्धता से सबसे ज़्यादा हानि महिलाओं, बच्चों एवं गरीबों को होती है। ये दशकों से पर्यावरण एवं समाज की मूलभूत समस्याओं के लिये जागरूकता फैलाने का कार्य कर रही हैं। इनके कार्यों से प्रभावित होकर सरकार ने 2005 में इन्हें पद्मश्री से अलंकृत किया। इन्हीं के नेतृत्व में 2005 में CSE को स्टॉकहोम वाटर प्राइज़ पुरस्कार मिला। 2005 और 2008 में ब्रिटिश मैगज़ीन 'प्रॉस्पेक्ट' और अमेरिकन मैगज़ीन 'फॉरेन पॉलिसी' ने दुनियाभर में मौजूद सर्वश्रेष्ठ 100 बुद्धिजीवियों की श्रेणी में इन्हें शामिल किया।

अनुपम मिश्र *(Anupam Mishra) (1948-2016)*

अनुपम मिश्र जाने माने लेखक, संपादक, छायाकार और गांधीवादी पर्यावरणविद् थे। वे कई दशकों से पर्यावरण और जल संरक्षण के क्षेत्र में कार्यरत थे। अलवर (राजस्थान) स्थित सूख चुकी अरवरी (Arwari) नदी के पुनर्जीवन में अनुपम मिश्र का प्रमुख योगदान रहा है।

वर्ष 1996 में इन्हें इंदिरा गांधी पर्यावरण पुरस्कार से सम्मानित किया गया एवं वे गांधी शांति प्रतिष्ठान से भी जुड़े हुए थे। महाराष्ट्र में जन्में अनुपम मिश्र जी ने राजस्थान, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, मध्य प्रदेश आदि राज्यों में परंपरागत जल स्रोतों के पुनर्जीवन की दिशा में भी कार्य किया है।